कविता का पर्यावरण

विजय राय

कविता का पर्यावरण

विजय राय

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2022

© विजय राय

‘कविता का पर्यावरण’ का पैटर्न सहज और सीधा है। शायद ही इस संग्रह की कविताओं की कोई पंक्ति दुरुह लगे। युगीन प्रखरताओं में रचे-बसे ओजस्वी आवेग ही इस रचना के ‘मूलधन’ हैं।

हमें यह देखकर बाहरी तौर पर भी कवि के नयेपन का सबूत मिला कि विजय राय की उम्र अभी 31 वर्ष की है। तरुण और युवक रचनाकारों की जमात में 45-47 की उम्र वाले भी ‘ताजा पीढ़ी’ माने जाते हैं, इस लिहाज से विजय राय की काव्य संभावनायें मुझे आश्वस्ति दे रही हैं। भोगने-झेलने और सीखने-समझने के लिये कई दशाब्दियां इनके सामने फैली पड़ी हैं।

काव्यात्मक उपलब्धि के लिए भाषा, शिल्प, छन्द, बिम्ब, लय, यति-गति, शैली, रीति, अलंकार, ध्वनि आदि अगले युगों में बिल्कुल फालतू तो नहीं घोषित होंगे- इस तथ्य की ओर तरुण कवियों को ध्यान देना होगा। लोक जीवन से ‘रिद्म’ क्या कभी मिट सकेगा? तो फिर हमारे उद्गार ही रिद्म-विहीन क्यों होंगे? संभव है कि कविता के झमेलों से बचने के लिए विजय राय आगे चलकर निबन्धों- कहानियों-नाटकों की तरफ मुड़ जाएं...विषय वस्तु और भाषा तो इनके पास है ही।

कैम्पस के परिवेश की आंतरिकता के दो छोर हुआ करते हैंः अग्निगर्भ और शिलीभूत-हिमाच्छादन। प्रस्तुत संग्रह की किसी कविता में एक प्राध्यापक संबोधित हुआ है, वह उन दो मध्य छोरों का प्रतीत हुआ...ग्रामीण आबोहवा में रमे हुए तरुण छात्र और

छोटे-मझोले ‘पुरबिया’ नगरों के जागरूक युवजन ही इन कविताओं का स्वाद ले सकेंगे। मैं तो बस आशीर्वाद ही दे सकता हूं।

-नागार्जुन

सूची

अंततः	8
उस रोज अपनी सोचों के उजास में	11
दिन के एक हिस्से से हुई बातचीत का ब्यौरा	13
अब कुछ नहीं कहूंगा	15
रिक्शेवान	17
विडंबना	20
बकलम खुद	22
ताकतवर का चरित्र	27
परात्म स्वीकृति	28
त्रिलोचन शास्त्री के लिए एक कविता	30
अपने ही बारे में	36
रिश्तेदारों के लिए	37
बराती	39
बाबू रोअत आ	40
मेरी कविता की पहचान करो	41
समकालीन होने के लिए	48

व्यवस्था 50

आत्मकथा 51

एक बोझिल अपेक्षा 52

अस्तित्व बोध! 54

आभास 56

कविता न रचने की कसम 58

अपने लिए किसी को सुनाने के लिए नहीं 60

कविता की नई पहचान 62

सुविधाजीवियों के लिए 64

प्रासंगिक प्रस्तावना 67

जब कमरे में होता हूं जब नहीं होता हूं 69

एक गैर रूमानी चिंता 72

गोपन व्यथा 75

गतिज प्रहरियों के लिए 78

जुड़े हुए 82

मशकगंज वाले डेरे पर 87

खुद से वाकफियत का सवाल 89

आत्म-विवेचन 92

तलाश 94

सान्द्र पीड़ा 96

अर्थोपकर्ष 98

हे बाबू! तनी बूझी 100

शाकाहारियों को सम्बोधित एक कविता 103

सूक्ष्म विज्ञान 105

अपनी फसल की चिंता 109

सीमा 111

संवाद के दरम्यान 112

छटपटाहट 113

नाखून क्यों बढ़ते हैं 115

प्रतीति 116

आदमी होने के लिए 118

क्योंकि

समझदार !

हर कोई समझदार

हम तो कहेंगे हर कोई समझदार!

लेकिन

मुनिया का कुत्ता

पियरिया की मैना

कुछ और कहते हैं

यानि कहती है मुनिया

दुहराती है पियरिया

कि कुत्ता-मैना

इन दिनों कहा करते हैं

‘आदमी इसलिए समझदार है

क्योंकि यह बात स्वयं आदमी कहता है।’

19.5.1983

अंततः

जुलूस में शामिल होने के पहले

तुम्हें उदास देखकर

मुझे चुप नहीं रहना है

कहना ही होगा कि

तुमने पाल लिया है यह नासूर

बेमतलब बेईमानों में।

एक नश्तर के हादसे में

तमाम उम्र के साथ जो बगावत की है

उसके मायने परकटा पंछी होता है।

बदकिस्मत! तुम्हारी रक्तिम चोंच को

अनायास हथकड़ियों के बीच रखेंगे तुम्हें

और तब जरूरत होगी